ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 मई 2020
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१२६, वर्ष-१३
ज्येष्ठ विक्रमी २०७७ (मई 2020)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्रः 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम्। स विश्वस्य वरुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ –ऋ० १। ७। ९। २

व्याख्यान–हे मनुष्यो! (तमूतयः) उसी इन्द्र परमात्मा की प्रार्थना तथा शरणागति से अपने को (ऊतयः) अनन्त रक्षण तथा बलादि गुण प्राप्त होंगे। (शूरसातौ) युद्ध में अपने को यथावत् (रणयन्) रमण और रणभूमि में शूर–वीरों के गुण परस्पर प्रीत्यादि प्राप्त करावेगा। (तं क्षेमस्य क्षितयः) हे शूरवीर मनुष्यो! उसी को क्षेम–कुशलता का (त्राम्) रक्षक (कृण्वत) करो। जिससे अपना पराजय कभी न हो। क्योंकि (सः विश्वस्य) सो करुणामय, सब जगत् पर करुणा करनेवाला (एकः) एक ही है, अन्य कोई नहीं। सो परमात्मा (मरुत्वान्) प्राण, वायु, बल, सेनायुक्त (ऊती) (ऊतये) सम्यक् हम लोगों पर कृपा से रक्षक हो। ईश्वर से रक्षित हम लोग कभी पराजय को प्राप्त न हों ।।४१।।

सम्पादकीय

कोरोना वायरस – सम्पूर्ण बन्द और शराब!

हम सभी जानते ही हैं कि चाइनीज कोरोना वाइरस एक वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुक है, जिससे सम्पूर्ण विश्व के विकसित एवं महाशक्तिशाली देशों की भी स्थिति दयनीय ही दिखाई दे रही है, और हो भी क्यों न? क्योंकि विकसित एवं शक्तिशाली देशों ने जो यह मानसिकता बना ली है कि धरती से अन्तरिक्ष और सागर की गहराई तक जो कुछ भी है, वह सब मनुष्यों के लिए ही है, चाहे वह जड़ (निर्जीव) हो या चेतन (सजीव) है तो हमारे ही भोग के लिए। इस भोगवादी, बाजारवादी, जीवनचर्या से अपने को विश्वविजेता से ब्रह्माण्ड विजेता समझने के आकण्ठ अहंकार में डूबे मानव को एक अदृश्य वाइरस ने ऐसा धक्का दिया कि सारी हेकड़ी निकल गयी और छुपने को अपने-अपने घर के अतिरिक्त जगह मिलनी भी असम्भव हो गयी। हमारे ही देश को देखिए! जिस देश का सामाजिक ढांचा आज भी विश्वभर में सबसे सुदृढ़ है, मजबूत है, अपना गांव, अपना शहर, अपने सम्बन्ध, अपनी प्रतिष्ठा आदि-आदि जो कुछ भी था, सब शून्य सा लगने लगा है, कारण चाहे एक महामारी ही है, एक अदृश्य विषाणु (वायरस) ही है, किन्तु जो देश से बाहर हैं, उन्हें अपने कहलाने वाले देशों ने रोका हुआ है, जो राज्य की सीमाओं से बाहर हैं- उन्हें राज्य की पुलिस सीमा में प्रवेश नहीं करने दे रही है, इसी प्रकार जिले वाले अधिकारी जिले में नहीं। रही बात गांव और घर की? तो कहना ही क्या है? इस कोरोना काल में सबसे अधिक यदि किसी को तिरस्कार झेलना पड़ा है तो वह सबसे प्रिय कहलाने वाले स्थान गांव और घर ही रहे हैं। ऐसी अवस्था में एक स्वाभाविक प्रश्न जो कि- आध्यात्मिक जगत के लोग प्रायः स्वयं से करते ही रहते हैं कि हे मनुष्य तू कौन है? कहाँ से आया है? किसलिए आया है? यह माता-पिता, बन्धु-बान्धव, पत्नी-पुत्र, इष्ट-मित्र तेरे कौन हैं? यहाँ क्या कर रहा है? आदि-आदि, प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से पूछना चाहिए! विचारना चाहिए! इस शान्ति से घर बैठने के काल में स्वयं अपनी ओर उन्मुख होना ही चाहिए था, जिससे तनिक कुछ तो अपने लिए सोच

शेष अगले पृष्ठ पर ....

सम्पादकीय का शेष ....

पाता, और सम्भवत: कुछ मुठ्ठीभर लोग सोचने भी लगे थे, कि तब तक अचानक ही हमारी लोकप्रिय केन्द्र सरकार ने तथा कुछ अपवाद छोड़कर राज्य सरकारों ने भी नशे के व्यापार को देश की जनता की सर्वोपरि आवश्यकता मानकर खोल दिया। लगभग चालीस-पैंतालीस दिनों से जो भीड़ अपने-अपने घरों में किसी प्रकार धैर्य धारण कर 'राजकीय कृपा' से रामायण, महाभारत, चाणक्य जैसे धारावाहिक आदि देखकर कुछ-कुछ अंशों में ही सही, कुछ अपनी संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं पर विचारने लगी थी। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का प्रेम, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव का स्नेह कुछ स्थान हृदयों में बना पाता कि सहसा पालनहार सरकारों ने अपनी प्रिय भोली-भाली जनता को रावण-कुम्भकर्ण, कंस-दुर्योधन वाले पाले में ला पटका और देखते-देखते बाजारों की सड़कों पर लम्बी-लम्बी लाइनें लग गयीं। यह एक निश्चित सिद्धान्त है कि- ''मानव को सुधारने के अनेक जतन करने पर सुधार हो जाय, यह पर्वत पर चढ़ने के समान अत्यन्त कठिन है। किन्तु पर्वत पर चढ़ चुके परमपुरुषार्थी मनुष्य को भी नीचे लाने के लिए एक छोटा सा बहाना भी पर्याप्त होता है और यही हो रहा है। आधुनिक बाजारवादी-उपभोक्तावादी अर्थव्यवस्था और महती हानि उठानी पड़ी, आवागमन ठप्प हो गया, कितनी कठिनाई उठाकर भी लोग सहमें से एक घर-स्थान पर रहे कि इस वैश्विक महामारी से बचे रह जाएंगे तो बाकी फिर देख लेंगे, कर लेंगे, सरकार ने भी समय रहते सम्पूर्ण बन्द (लॉकडाउन) करवाने का निर्णय लिया वह भी उचित ही था। किन्तु अब जब कुछ तबलीगी जमातियों के मूर्खतापूर्ण कृत्यों यह रोग दूर-दूर तक फैल गया तब यह शराब के कारोबार का, व्यापार का आत्मघाती निर्णय क्या परिणाम देगा? क्या इस एक बुद्धिहीनता के निर्णय से सारा परिश्रम विफल नहीं होगा? क्या अब फिर देश लाखों लोग इस चाइनीज वायरस से संक्रमित होकर मृत्यु में नहीं जाएंगे? इन पीने-पिलाने वालों के कारण लाखों निर्दोष लोगों को दु:ख नहीं भोगना पड़ेगा?

पाठकगणों! आइए जानते हैं- हमारी गौरवशाली ऋषि परमम्परा में, हमारे धर्मशास्त्रों में इस विषय में स्पष्ट निर्देश उपलब्ध है- 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित, राजर्षि मनु द्वारा वर्णित राजा के लिए सबसे हानिकारक दश दुष्ट व्यसन हैं- 1. शिकार खेलना, 2. जुआ खेलना, 3. दिन में सोना, 4. कामकथा, 5. दूसरे की निन्दा करना, 6. स्त्रियों का अति संग, 7. मादक द्रव्य अर्थात् मद्य, अफीम? भांग, गांजा, चरस आदि का सेवन, 8. गाना, बजाना, नाचना, 9. नाच कराना, सुनना और देखना, 10. वृथा इधर-उधर घूमते रहना। यह काम (इच्छा) से उत्पन्न होते हैं।

1. पैशून्यम्- अर्थात् चुगली करना, 2. बलात्कार, 3. द्रोह-वैर रखना, 4. ईर्ष्या-दूसरे की उन्नति देखकर जलना, 5. असूया- दोषों में गुण, गुणों में दोषारोपण करना, 6. अर्थदूषण- अधर्मयुक्त बुरे कामों में धनादि व्यय करना, 7. वाग्दण्ड- कठोर वचन बोलना और 8. पारुष्यम्- बिना अपराध दण्ड देना।

उपरोक्त अठ्ठारह दुष्ट व्यसनों में सबसे भयानक व्यसन सात बताए गयें हैं- 1. व्यर्थ व्यय, 2. कठोर वचन, 3. अन्याय से दण्ड देना, 4. शिकार खेलना, 5 स्त्रियों का अत्यन्त संग, 6. जुआ (घूत) खेलना, 7. मद्यादि का सेवन करना।

उपरोक्त में भी क्रम से सबसे अन्तिम अर्थात् मद्यापान (शराब पीना) सबसे निकृष्ट सबसे भयानक व्यसन राजा के लिए बताया गया है और आगे ऋषि लिखते हैं कि व्यसन में फंसने से मर जाना अच्छा है। जब राजा के लिए इतना कठोर निर्देश है तो फिर सामान्य जनता का तो कहना ही क्या है? किन्तु दुर्भाग्य कि- जिस जनता को राजा (सरकार) ही शराब पीने के लिए प्रोत्साहित करता हो, उस शराब को राज्य एवं देश की अर्थव्यवस्था का संचालक समझकर उसके व्यापार को इस वैश्विक महामारी में भी आवश्यक समझते हों। समझ जाइए! कोरोना असली कहर उस करकार के शासन में आना बाकी है अर्थात् अभी कोरोना कहर ढाएगा।

''जो जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानता अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूँ और जो मतमतान्तर के परस्पर विरूद्ध झगड़े हैं उनको मैं प्रसन्न नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फँसा के परस्पर शत्रु बना दिए हैं। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से 'यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे, जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।'' -ऋषि दयानन्द

'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिये है कि जिससे सञ्चित प्रारब्ध बनते जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है। -ऋषि दयानन्द

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-१०

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

पाठक वृन्द! वैदिक आचार के प्रचार की न्यूनता व अभाव के कारण हम अनेक विध दुर्दशाओं को प्राप्त होते आ रहे हैं और इसके प्रचार में जितनी देरी हो रही है उतना ही दुर्दैव हमारा दूर तक पीछा नहीं छोड़गा। अभी हाल ही में कुछ सुधिजन चर्चा कर रहे थे कि पति-पत्नी दोनों का सम्बन्ध बराबर का है परन्तु पितृ सत्तात्मक व्यवस्था के कारण पत्नी पति के पैर छूती है पति नहीं। उनके अनुसार पति को भी पत्नी के पैर छूने चाहिए। फिर कुछ ऐसे चित्र भी देखने को मिले जिनमें पति पत्नी के पाँव छू रहा था। घनघोर आश्चर्य है! अब इन भोले भाईयों बहनों को कौन समझाये कि यह सम्बन्ध ऐसा है कि जिसमें कौन छोटा कौन बड़ा इसका आंकलन करने में हानि के अतिरिक्त लाभ कुछ है ही नहीं। यदि ऐसे विचारें तो वधू ही अपने मातापितादि परिजनो और घर को छोड़कर क्यों जावे पति क्यों न जावे और पति जाने लगे तो वही क्यों जावे तब भी कहाँ बराबरी हो सकेगी ऐसे न जाने कितने प्रश्न खड़े किये जा सकते हैं। ऐसी सोच से विवाह नामक इस संस्था की बर्बादी निश्चित है। अतः सन्तुलित मन-मस्तिष्क के साथ वैदिक आचार पर विचार करके उसी को ग्रहण करना आवश्यक है।

पूर्व आलेख में हम विचार कर रहे थे कि पति अपनी पत्नियों के जीवन को उच्च बनाने के लिए कष्ट झेलते हैं उसे कष्टों और संकटों से बचाते हैं। यही तो प्रेम और सम्मान की वह मूक अभिव्यक्ति है जहाँ सम्मान दिखाया नहीं अपितु किया जा रहा है। साथ ही यह भी सीखिये कि सम्मान दिखाया कैसे जावेगा, बारात वधू को लेकर चलने को तैयार है वधू पक्ष के स्त्री पुरुष उसे सजे धजे वाहन में बैठाने लगे हैं ऐसी अवस्था में ऋषि निर्देश करते हैं कि वाहन में बैठाते समय वर वधू को अपने दक्षिण पार्श्व में (बाजू में) बैठावे और उस समय ये मन्त्र बोले-

ओ३म् पूषा त्वेतो नयतु हस्त गृह्याश्विना त्वा प्रवहतां रथेन।
गृहान् गच्छ गृहपत्नियथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि ॥१॥
सुकिं शुकं शल्यलिं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम।
आरोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पत्ये वहतुं कृणुष्व ॥ २ ॥

हमारी परम्परा है सम्मानीय लोगों को दांयी ओर बिठाते हैं, यह पत्नी के प्रति सम्मान का प्रदर्शन हैं। शिष्य अपने गुरु को दायीं हाथ की ओर बिठाता है। यजमान पुरोहित को अपने दायीं ओर बिठाकर सम्मान देता है। पुनः इन दोनों मन्त्रों को बोलकर वहाँ से चले- बड़े प्रेम की भावना से पति कहता है कि हे प्रिये! जिसने तेरा पाणिग्रहण किया है वह मैं यहाँ से तेरा हाथ पकडने के योग्य हूँ। मैं आपको इस वेगवान वाहन से शीघ्र अपनी घर ले जाना चाहता हूँ। तू मेरे साथ घर चलकर मेरे घर की गृहपत्नी अर्थात् गृह स्वामिनी हो घर में अपने से छोटो और भृत्यादिकों को आज्ञा देने वाली हो और इतना ही नहीं आप अपने शुभ कार्यों से मुझे भी वश में कर लोगी। और हे देवी इस सजे धजे वाहन में बैठकर आप शीघ्रता से मेरे घर चलो। वहाँ चलकर मेरे घर को **'अमृतस्य लोकम्'** कर दो। अमृत का सुख का लोक बना दो अर्थात् मेरे घर को स्वर्ग बना दो।

अब मूर्खपन के बिना इनकी तुलना नहीं की जा सकती यहाँ समानता या असमानता के लिए सोचने का स्थान ही कहाँ है। जब दोनों एक दूसरे के पति-पत्नी स्वामी-स्वामिनी हो गये तब ऐसी बातों के लिए स्थान कहाँ है। ये प्रश्न ही वेदाज्ञाओं के पालन न होने वा अधूरा पालन होने से उठते हैं। वैदिक भावना से गृहस्थ को स्वस्थ करने की आवश्यकता है। कितनी उदात्त भावना है कि आप घर की स्वामिनी तो हो ही गई हो पर मुझे विश्वास है अपने कार्यों से आप मुझे भी अपने वश में कर लोगी। आप तो वशीकरण का मन्त्र जानती हो। ये शुभ कर्म ही वशीकरण का मन्त्र है जब समर्पण से बिना छल कपट और कलह के बिना माप-तोल या मोल-भाव के एक दूसरे का हुआ जाता है तब एक दूसरे के वश में होकर इतना आनन्द सृजन हो उठता है कि **'घर-घर नहीं अमृत लोक अर्थात् स्वर्ग हो जाता है जहाँ सुख ही सुख है।'**

जब मार्ग में कोई नदी पार करनी हो नौकादि पर चढ़ना पड़े अथवा भयानक चोर-डाकुओं से युक्त वा ऊँचे-नीचे मार्ग से जाना पडे तो वहाँ भी ऋषियों ने निम्नलिखित मन्त्रों का विधान किया है-

नौका में बैठते समय-

अश्मन्वता रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।

और नाव से उतरते समय-

अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्

भयानक मार्ग से जाते समय-

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीतदन्ति दम्पती।
सुगेभिर्दुगमतीतामवप द्रान्त्वरातयः॥

अर्थः- हे सहयात्रियों! इस वेगवान नदी को तरते समय नौका में वैसे स्थिर रहिये जिससे नौका बिना किसी उपद्रव के पार हो जावे।

हे प्रिय पत्नी! नौका से उतरते हुवे यह भावना रखो कि जो कुछ भी दुःसाध्स है उसे यहीं नदीं में छोड़कर हम सुख सम्पादन करने के लिए उतर रहें हैं।

मार्ग में पड़ने वाले जो भी उपद्रव चोर डाकु आदि हैं हे ईश्वर आपकी कृपा से वे हमें मिलें ही नहीं और जो सम्मुख आ भी जावें तो टिक न सकें भाग जावें और हम सुख पूर्वक अपने गन्तव्य तक पहुँचें।

दर्शनीय यह है कि अब तक प्रेम और घर के सुख की बात करने वाला वर जैसे ही भय वा कष्ट का समय आता है वह पत्नी के समक्ष एक ढाल की भाँति जिम्मेदार बनकर खड़ा हो जाता है। अब प्रश्न है कि क्या बिना किसी का सम्मान किये हम किसी के लिए ढाल बन सकते हैं। ...

क्रमशः

संध्या काल

ज्येष्ठ-मास, ग्रीष्म-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077 (8 मई 2020 से 5 जून 2020)	आषाढ़-मास, वर्षा-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077 (06 जून 2020 से 5 जुलाई 2020)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)	प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)	सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

पञ्चमहायज्ञ - जीवन का आधार

-आचार्य सतीश, दिल्ली

इसमें पञ्चमहायज्ञ का विधान है जिनके नाम यह हैं- 1. ब्रह्मयज्ञ, 2. देवयज्ञ, 3. पितृयज्ञ, 4. भूतयज्ञ, 5. अतिथिदेवयज्ञ। इन नित्य कर्मो के फल यह है- ज्ञान प्राप्ति से आत्मा को उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख, व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं, इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है।

ब्रह्मयज्ञ का दुसरा नाम सन्ध्योपासना (उपासना और संध्या)। देवयज्ञ का अग्निहोत्र, पितृयज्ञ का तर्पण और श्राद्ध, भूतयज्ञ का बलिवैश्वदेव और अतिथिदेवयज्ञ का अतिथिसेवा है। ब्रह्मयज्ञ मनुष्य को ज्ञान, कर्म और उपासना के बल ये युक्त करता हुआ उसको अपनी और दूसरों की भलाई के लिए अन्य चार यज्ञों का सामर्थ्य देता है। इन पांच यज्ञों का करने वाला अपनी उन्नति के साथ साथ औरों की उन्नति दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझता है। यदि ब्रह्मयज्ञ में ईश्वर के ध्यान करने से आत्मा निज उन्नति करता है तो उसके साथ-साथ पापकर्म से बचने और दूसरों को हानि न पहुँचाने की प्रतिज्ञा करता है। इसलिए ब्रह्मयज्ञ मनुष्य की आत्मोन्नति और सामाजिक उन्नति का मूल है। हवन करने से यहाँ मनुष्य बल, पुष्टि देने वाले सुगन्धित पदार्थो का सार स्वयं आकर्षण करता है वहाँ वह प्राणिमात्र की रोगवृत्ति के लिए इस सुगन्धि का विस्तार करता है। इसलिए देवयज्ञ मनुष्य की निज आरोग्यता और सामजिक आरोग्यता का कारण है। पितृयज्ञ करने से मनुष्य जहाँ अपने आत्मा के प्रेम गुण की उन्नति करता है वहाँ औरों की सेवा सत्कार से मनुष्य समाज को लाभ पहुंचता है, इसी प्रकार भूतयज्ञ और अतिथियज्ञ करने से मनुष्य अपने प्रेम की उन्नति करता हुआ दूसरों की बराबर उन्नति करता है।

कई लोग इन पांच यज्ञों को केवल निजोन्नति के साधन मानते हैं, यदि वे विचार से काम लें तो उनको प्रतीत होगा कि ये अपनी और दूसरों की उन्नति के बराबर साधन हैं। जो लोग इन पञ्चयज्ञों को केवल दूसरों की उन्नति का साधन कहते हैं, वे इस बात को नहीं समझते कि किस प्रकार दूसरों की उन्नति करते हुये हम अपनी उन्नति करते हैं, औरों का उपकार करने से निजप्रेम की शक्ति उन्नत होती है। निष्काम कर्म करने वाले इसी विश्वास को मन में रखते हुये सन्तोष धारण करते हैं वे समझते हैं कि यद्यपि लोग हमारे उपकार की प्रशंसा न करें तो भी हम अपनी उन्नति परोपकार करने से अवश्य कर रहे हैं मन में दूसरे की हानि का संकल्प तक लाने से निश्चित हम अपनी हानि करते हैं, औरों पर क्रोध करने से हम आप ही अशान्त होते हैं। जैसे मनुष्य, ज्ञान या विद्यादान से अपनी विद्या की उन्नति करता है वैसे ही प्रेम के दान से निज प्रेमरूपी स्वभाव की उन्नति करता है। यदि कोई अतिथि आदि की सेवा प्रेमपूर्वक करता है तो ऐसा करने के साथ ही वह अपनी प्रेमशक्ति की उन्नति करता है जो ज्ञान के साथ-साथ उपासना, कर्म या प्रेम की उन्नति नहीं करता वह स्वस्थ या नीरोग कहलाने का अधिकारी नहीं। साम्यावस्था का नाम पूरी आरोग्यता है और वह ज्ञान, कर्म और उपासना में सम और साथ-साथ उन्नति करने से प्राप्त होती है। विद्वान बतलाते हैं कि मनुष्य, स्त्री, पुत्र, भाई, पिता और प्राणीमात्र से जो प्रेम करता है तो इसलिये कि यह प्रेम तत्व उसके आत्मा में भर रहा है। इसलिये इस बात को भली प्रकार जान लेना चाहिये कि जो मनुष्य प्रेमपूर्वक किसी की सेवा करता है तो ऐसा करने से वह जहाँ दूसरों को सुख पहुंचता है वहां साथ ही अपनी प्रेमशक्ति की उन्नति करता है या यों कहो कि दूसरों से प्रेम अपनी प्रेमशक्ति को दृढ़ करने के लिये व्यायाम का काम देता है।

यदि आस्तिक अन्याय का आचरण नहीं करता तो क्या इससे उसकी और मनुष्य समाज दोनों की उन्नति नहीं होती? यदि भूतयज्ञ करने वाला रोगियों की सेवा करता है तो क्या इस कर्म से वह अपनी और दूसरों की उन्नति नहीं करता? सच तो यह है कि अपनी उन्नति के साथ दूसरों की उन्नति ऐसी लिपटी हुई है जैसे वृक्ष के साथ लता, एक को दूसरे से कोई पृथक नहीं कर सकता। कोई कह सकता है कि महर्षि दयानन्द समाधि केवल अपनी उन्नति के लिये लगाते थे, हम कह सकते हैं कि अपनी सच्ची उन्नति करने से वह अपने आपको मनुष्य समाज की उन्नति करने के योग्य बना रहे थे। विचार से सिद्ध होता है कि मनुष्य अपनी सच्ची उन्नति में सामाजिक उन्नति का बीज बोता है। ब्रह्मचर्याश्रम जो कि मनुष्य की निज उन्नति का एक साधन है वह संन्यास आश्रम का जिसमें औरों की उन्नति की जाती है मूल है। जिस कक्षा तक कोई अपनी उन्नति करता है, उस कक्षा तक ही वह मनुष्य समाज का उपकार कर सकता है। जो लोग कहते हैं कि सामाजिक उन्नति करो और साथ ही बतलाते हैं कि जो समय पञ्चमहायज्ञों के करने में लगाते हो, उसको देशभक्ति के अर्पण करा दो, वे लोग सामाजिक उन्नति के अर्थ को ही नहीं समझते। हिंसक मनुष्य यदि अपने दुर्गुण को ईश्वर की उपासना से नष्ट करना नहीं चाहता तो हम नहीं जानते कि वह सिवाय समाज को हानि पहुंचाने के क्या लाभ पहुंचा सकात हैं? ब्रह्मयज्ञ आदि कर्म मनुष्य और सामाजिक उन्नति के बराबर साधन है इसीलिये महर्षि मनु की आज्ञा है कि जो नित्य सन्ध्योपासन नहीं करता उसको द्विज पदवी से पतित कर देना चाहिये। परन्तु आज पश्चिमीय दीपक के प्रकाश में काम करने वाले कहते हैं कि हम चाहे उपासना करें, हम चाहे शुद्धाचारी बनें या न बनें तो भी हम सामाजिक उन्नति के लिये काम कर सकते हैं जो कि सर्वथा अयुक्त है।

सामाजिक उन्नति को यदि फल कहें तो स्वात्मोन्नति उसका बीज है, बीज की रक्षा करने से फल की आशा हो सकती है। समाज की काया पलटाने के लिए अपनी काया पलटाने की पहिले आवश्यकता है, पञ्चमहायज्ञ आदि नित्य कर्मों का पालन करने वाला मानो नित्य अपनी और मनुष्य समाज की उन्नति कर रहा है।

अत: इन पंचमहायज्ञों का व्यापकीकरण आवश्यक है। थोड़े से लोगों द्वारा इन यज्ञों के करने से सामाजिक व्यवस्थाएँ नहीं बदल पाती हैं और दीर्घकाल में फिर उनकी भी संख्या घटती चली जाती है। अत: जब लाखों करोड़ों लोग यज्ञ करने लगेंगे तभी वायु की शुद्धि होगी। जब करोड़ों की संख्या में पितृयज्ञ करेंगे तभी परिवारों में सुख-शान्ति और आने वाली पीढ़ी सुसंस्कृत हो सकती है। श्रेष्ठ सिद्धान्तों के व्यापकीकारण से ही यह सम्भव होता है और तभी उसका लाभ समाज को मिलता है और इनको व्यापक करने का दायित्व भी उन्हीं पर है जो इनके महत्व को जानते हैं और समझते हैं क्योंकि जो उसकी उपयोगिता को ही नहीं जानता वह क्यों उसका प्रचार करेगा।

अत: हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप इन पंचमहायज्ञों को जन-जन तक पहुंचाएं। आर्य विचारधारा को व्यापक करके ही लोगों को इन यज्ञों के लिए प्रेरित किया जा सकता है और एक आर्य ही इनके महत्त्व को समझता है कि व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए ऋषियों के ये सिद्धान्त और कार्य कितने महत्त्वपूर्ण हैं। अत: हमें इन सिद्धान्तों को व्यापक करने के लिए स्वयं सुदृढ़ और सशक्त आर्य बनाना होगा और अन्यों को भी बनाना होगा।

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शया हैं। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

ओ३म्

नमो विश्वम्भराय जगदीश्वराय

अथ गोकरुणानिधिः

स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः

गाय आदि पशुओं की रक्षा से सब प्राणियों के सुख के लिए अनेक सत्पुरुषों की सम्मति के अनुसार आर्यभाषा में बनाया।

इसके अनुसार वर्त्तमान करने से संसार का बड़ा उपकार है।

ओ३म् नमो नमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय॥

गोकरुणानिधिः

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥

-यजुः० अ० ३६। मं० ८

तनोतु सर्वेश्वर उत्तम बलं गवादिरक्षं विविधं दयेरितः।
अशेषविघ्नानि निहत्य न प्रभुः सहायकारी विदधातु गोहितम्॥१॥
ये गोसुखं सम्यगुशन्ति धीरास्ते धर्मजं सौख्यमथाददन्ते ।
क्रूरा नराः पापरता न यन्ति प्रज्ञाविहीनाः पशुहिंसकास्तत् ॥२॥

भूमिका

वे धर्मात्मा विद्वान् लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण-कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब संसार को सुख पहुँचाते हैं। और शोक है उन पर, जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिए वर्त्तमान हैं। पूजनीय जन वे हैं कि जो अपनी हानि होती हो, तो भी सब के हित करने में अपना तन-मन-धन सब कुछ लगाते हैं। और तिरस्करणीय वे हैं, जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते हैं।

ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा, जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सब को लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब विना अपराध किसी प्राणी का प्राण-वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे?

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे, कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें। और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें, कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।

इस ग्रन्थ में जो कुछ अधिक न्यून वा अयुक्त लेख हुआ हो, उसको बुद्धिमान् लोग इस ग्रन्थ के तात्पर्य के अनुकूल कर लेवें। धार्मिक विद्वानों की यही योग्यता है कि वक्ता के वचन और ग्रन्थकर्त्ता के अभिप्राय के अनुसार ही समझ लेते हैं। यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है। जिससे गो आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाये जावें, और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सबका सुख बढ़ता रहे। परमात्मा कृपा करे कि यह अभीष्ट शीघ्र सिद्ध हो।

इस ग्रन्थ में तीन प्रकरण हैं-एक समीक्षा, दूसरा नियम और तीसरा उपनियम। इनको ध्यान दे, पक्षपात छोड़, विचारके राजा तथा प्रजा यथावत् उपयोग में लावें कि जिससे दोनों का सुख बढ़ता ही रहे।

॥ इति भूमिका॥

क्रमाश ...

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	22 मई	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-कृत्तिका
पूर्णिमा	05 जून	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अनुराधा
अमावस्या	21 जून	दिन-रविवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-मृगशिरा
पूर्णिमा	05 जुलाई	दिन-रविवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट- **www.aryanirmatrisabha.com** पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

08 मई- 05 जून 2020 **ज्येष्ठ** ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				विशाखा कृष्ण प्रतिपदा 8 मई	अनुराधा/ज्येष्ठा कृष्ण द्वितीया 9 मई	मूल कृष्ण तृतीया 10 मई
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 11 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 12 मई	श्रवण कृष्ण षष्ठी 13 मई	श्रवण कृष्ण सप्तमी 14 मई	धनिष्ठा कृष्ण अष्ठमी 15 मई	शतभिषा कृष्ण नवमी 16 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण दशमी 17 मई
उत्तराभाद्रपदा कृष्ण एकादशी 18 मई	रेवती कृष्ण द्वादशी 19 मई	अश्विनी कृष्ण त्रयोदशी 20 मई	भरणी कृष्ण चतुर्दशी 21 मई	कृत्तिका कृष्ण अमावस्या 22 मई	रोहिणी शुक्ल प्रतिपदा 23 मई	मृगशिरा शुक्ल द्वितीया 24 मई
मृगशिरा तृतीया 25 मई	आर्द्रा शुक्ल चतुर्थी 26 मई	पुनर्वसु शुक्ल पंचमी 27 मई	पुष्य शुक्ल षष्ठी 28 मई	आश्लेषा शुक्ल सप्तमी 29 मई	मघा/पू. फाल्गुनी शुक्ल अष्टमी 30 मई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल नवमी 31 मई
हस्त शुक्ल दशमी 1 जून	चित्रा शुक्ल एकादशी 2 जून	स्वाति शुक्ल द्वादशी 3 जून	विशाखा शुक्ल त्रयोदशी/ चतुर्दशी 4 जून	अनुराधा शुक्ल पूर्णिमा 5 जून		

6 जून-5 जुलाई 2020 **आषाढ़** ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
					ज्येष्ठा कृष्ण प्रतिपदा 6 जून	मूल कृष्ण द्वितीया 7 जून
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण तृतीया 8 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 9 जून	श्रवण कृष्ण पंचमी 10 जून	धनिष्ठा कृष्ण षष्ठी 11 जून	शतभिषा कृष्ण सप्तमी 12 जून	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अष्टमी 13 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण नवमी 14 जून
रेवती कृष्ण दशमी 15 जून	अश्विनी कृष्ण एकादशी 16 जून	अश्विनी कृष्ण एकादशी 17 जून	भरणी कृष्ण द्वादशी 18 जून	कृत्तिका कृष्ण त्रयोदशी 19 जून	रोहिणी कृष्ण चतुर्दशी 20 जून	मृगशिरा कृष्ण अमावस्या 21 जून
आर्द्रा शुक्ल प्रतिपदा 22 जून	पुनर्वसु शुक्ल द्वितीया 23 जून	पुष्य शुक्ल तृतीया 24 जून	आश्लेषा शुक्ल चतुर्थी 25 जून	मघा शुक्ल पंचमी/षष्ठी 26 जून	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल सप्तमी 27 जून	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल अष्टमी 28 जून
हस्त/चित्रा शुक्ल नवमी 29 जून	स्वाति शुक्ल दशमी 30 जून	विशाखा शुक्ल एकादशी 1 जुलाई	अनुराधा शुक्ल द्वादशी 2 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल त्रयोदशी 3 जुलाई	मूल शुक्ल चतुर्दशी 4 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा 5 जुलाई

ऋषि दयानन्द के अद्भुत कार्य - अवीनाश आर्य, मुजफ्फरनगर

स्वामी दयानन्द सरस्वती:- धर्म का प्रहरी राष्ट्र भक्त व पाखंडियों का परम शत्रु या अंग्रेजों का जासूस।

मुगलों ने भारत को पदाक्रांत किया, लूटा, मान सम्मान को कुचला, साहित्य नष्ट किया, भवनों में कब्रों का निर्माण कर कब्जे किए, मंदिरों के खिलौने तोड़े, उनको मस्जिद बनाया, शहरों के नाम बदल डाले आदि आदि अत्याचार किये।

फिर अंग्रेजों ने इसी श्रृंखला को और अधिक कुटिलता व धूर्तता के साथ आगे बढाया। मुगलों द्वारा किये छल को न्याय कहा। इतिहास की मिलावटों को मान्यता दी और हमारी संस्कृति की जड़ें खोदकर फेंक दी। हमारी हर शक्ति को क्षीण किया। इतिहास के साथ हमारे शास्त्रों में मिलावट व शस्त्रों से हीन करने का कार्य बहुत कुशलता से किया। जो विषैले बीज उसने बोये उनके विशाल वृक्ष व उनका भी समूह भयानक जंगल बनकर हमे लील रहा है।

ऐसे ही संकटों के घिरे भारत में एक व्यक्ति अपना जीवन खतरों में डालकर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक धरोहरों को बचाने के लिए सत्ता व धर्म के ठेकेदारों से भिड़ जाता है।

वो वेदों के सही भाष्य करता है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए दिन रात एक कर देता है। विधर्मियों को शीशा दिखाता है तो वैदिक धर्म में आई कुरीतियों पर भी प्रहार वेद मत के अनुसार करता है।

स्त्रियों की शिक्षा व पुनर्विवाह पर बल देता है। जातियों में बँटे समाज को वर्ण व्यवस्था समझाता है, जन्मजात श्रेष्ठता को नकारता है व सिद्ध भी करता है। मनु स्मृति की न्याय व्यवस्था को अपनाने पर बल देता है।

क्षुद्रों के छिने अधिकारों की वापसी पर भी अड़ता है। सती प्रथा, बलि प्रथा, छुआ-छूत, मांसाहार आदि का डंके की चोट पर विरोध करता है। पाखंडों के पुरोधाओं को उनके की अड्डों पर ललकारता है और पराजित करता है।

वेद के अनेकों सिद्धान्तों को समझाता है और उनके त्रुटिपूर्ण अर्थों की भर्त्सना करता है। बुद्धि को जड़ करने वाली मूर्तिपूजा रूपी महरोग का विरोध कर पाखंडियों के पेट पर कठोर प्रहार करता है।

अनेकों अपमान व षडयंत्रों का शिकार होता है पर सिद्धान्तों से नहीं डिगता। गाय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान देता है तो कभी वेदों की ओर लौटने का आह्वन् करता है।

राम व कृष्ण जैसे महापुरुषों का वास्तविक चरित्र सामने धरता है तो किसान व खेती की प्रशंसा भी करता है।

पर जब राष्ट्र धरा को अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित देखता है तो शास्त्रों को बगल में धरकर शस्त्रों को उठाने के लिए मंगल पांडे, झाँसी की रानी, बहादुर शाह जफर के साथ अनेक संतों व फकीरों को ललकारता है।

गाँव गाँव में बने आर्यों के गौरक्षा दल क्रांति करने को कूद पडते हैं इसी के आह्वन् पर। स्वदेशी समर्थक इसी क्रांतिकारी गुरू के कहने पर और इनसे प्रेरणा लेकर लाखों देशभक्त लोग स्वराज की प्राप्ति के लिए परवाने बनकर धधक उठते हैं।

मूर्तियों के भरोसे बैठा समाज जिन्दा हो उठता है और वेद की ओर लौटने लगता है। उनसे प्रेरित व्यक्तियों का योगदान किसी से छिपा नहीं। आज भी उनके अनुयायी अनेक विरोध व अपमान झेल कर समाज मे वैद्य के रूप में सत्य सिद्धांतों का प्रतिपादन करने से पीछे नही हटते।

ब्रह्मचारी, ज्ञानी, गुरुप्रिय, राष्ट्रभक्त, योगी, सत्यवादी, दया की मूर्ति, साहसी, सहनशील, बलशाली, बलिदानी इस गुरु को अंग्रेजों का जासूस कहने वालों को लाज आनी चाहिए। धर्म को धंधा बनाकर पाखंड फैलाने वालों को ये कहते हुए कि सनातन को चोट पहुंचाने वाले थे दयानंद, डूब मरना चाहिए।

न कोई इतिहास है न प्रमाण, ना कोई साक्षी और न ही कोई ऐसा कारण या अनुभव जिससे कोई ये कह सके कि उन्होंने धर्म का अहित किया या राष्ट्र विरोधी कोई कार्य किया। फिर भी केवल अपनी कुंठा, मानसिकता व धंधे पर प्रभाव के कारण आरोप लगाना पाप है।

यदि अज्ञानतावश कोई ऐसा कहे तो मूर्खता है ही परन्तु यदि विद्वान व्यक्ति भी कुंठित व पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर अधर्म करे तो वह दण्ड का अधिकारी है।

जय आर्य- जय आर्यावर्त !!! वेदों की जय हो!!!

धर्म की जय हो !!! अधर्म का नाश हो !!!

अग्निहोत्र विधिः

प्रकाशक :-

आर्य महासंघ
ARYA MAHASANGH

१८०, पॉकेट-०२, सैक्टर-२३,
रोहिणी, दिल्ली (भारत)-११००८५

180, POCKET-02, SECTOR-23,
ROHINI, DELHI (BHARAT)- 110085

Facebook : आर्य महासंघ भारत
Twiter : @AaryaMahasangh
E-mail: aaryamahasangh@gmail.com,
Web: aryamahasangh.com,
Mobile: 9868792232, 9350945482

॥ अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः ॥

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रन्तन्नऽ आ सुव ॥१॥
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ॥८॥

इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना-प्रकरणम् ॥

॥ अथ संकल्पपाठः ॥

ओं तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे वैवस्वतेमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे एकोवृन्दःषण्णवतिः कोटयोऽष्टौ लक्षाणि त्रिपञ्चाशत् सहस्राणि अमुक[१] सँवत्सरे अमुक[२] अयने, अमुक[३] ऋतौ, अमुक[४] मासे, अमुक[५] पक्षे, अमुक[६] तिथौ, अमुक[७] वासरे, अमुक[८] नक्षत्रे, अमुक[९] काले आर्यावर्ते अमुक[१०] प्रान्तस्य अमुक[११] जनपदस्य अमुक[१२] स्थाने अयं देवयज्ञः क्रियते॥ (टिप्पणी : अमुक 1 से 12 के स्थान पर पंचांग के अनुसार क्रमशः संवत्सर्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, काल तथा प्रांत, जनपद व स्थान बोलें)

॥ अथ आचमनमन्त्राः ॥

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे पहला आचमन करें
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा आचमन करें
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥१॥
इससे तीसरा आचमन करके अङ्गस्पर्श करें।

॥ अथ अङ्गस्पर्शमन्त्राः ॥

ओम् वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आँखें
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों भुजाएँ

ओं ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जंघाएँ
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥
इस मन्त्र से सम्पूर्ण शरीर पर जल के छीटें देवें।

॥ अथ अग्न्यानयनमन्त्रः / दीपप्रज्वालनमन्त्रः ॥

ओं भूर्भुवः स्वः ।

॥ अथ अग्न्याधानमन्त्रः ॥

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

॥ अथ अग्निसमिन्धनमन्त्रः ॥

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

॥ अथ समिदाधानमन्त्राः ॥

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम॥१॥ इस मन्त्र से पहली

ओं समिधाग्निं दुवस्यतघृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम॥२-३॥ इन दोनों मंत्रों से दूसरी।
ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदं न मम॥४॥ इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

॥ अथ पञ्चघृताहुतिमन्त्रः ॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम॥१॥

॥ अथ जलप्रोक्षणमन्त्राः ॥

निम्न मन्त्रों से अञ्जलि में जल लेकर छिड़कावें-
ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥ (इस मन्त्र से पूर्व दिशा में दक्षिण से उत्तर)
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥ (इस से पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर)
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥३॥ (इससे उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व)
ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥
(इससे प्रदक्षिणवत् वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।)

॥ अथ आघारवाज्यभागाहुति मन्त्राः ॥

घृत से चार आघारवाज्यभागाहुति देवें।
ओम् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये-इदं न मम ॥१॥
(इस से वेदी के उत्तर भाग की अग्नि में)
ओम् सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय-इदं न मम ॥२॥
(इससे दक्षिण भाग की अग्नि में)

ओम् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये-इदं न मम ॥१॥ (इससे मध्य में)
ओम् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय-इदं न मम ॥२॥ (इससे मध्य में)

॥ अथ प्रातःकालाग्निहोत्रमन्त्राः ॥

ओं सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ॥१॥
ओं सूर्य्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ॥२॥
ओं ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

॥ अथ सायंकालाग्निहोत्रमन्त्राः ॥

नीचे लिखे हुए मन्त्रों से सायंकाल आहुतियाँ देवें।
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥
इस मन्त्र को मन से उच्चारण करके तीसरी आहुति देवें।
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽ अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥

॥ अथ उभयकालीनमन्त्राः ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः-सायं आहुति देनी चाहिए-
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा॥ इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम ॥१॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा॥ इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम ॥२॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा॥ इदमादित्याय व्यानाय इदं न मम ॥३॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-इदं न मम ॥४॥
ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥५॥
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्नऽ आ सुव स्वाहा ॥७॥
ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥
(यदि समय, संसाधान व रुचि हो तो इसके बाद गायत्री मंत्र तथा विश्वानि देव मंत्र से और आहुतियाँ दे सकते हैं।)

॥ अथ पूर्णाहुतिमन्त्राः ॥

निम्न मन्त्रों से स्रुवा को घृत से पूरा भरकर तीन आहुतियाँ देवें।
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। इससे एक
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। इससे दूसरी
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा॥ इससे तीसरी आहुति देवें।

इति अग्निहोत्रम् ॥

ईश्वर प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए॥
वेद की बोले ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचाएं यज्ञ पर उपकार को॥
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें॥
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर नारि की॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हो शुभ गन्ध को धारण किये॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, आर्य-पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो॥
प्रेम रस से युक्त होकर वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा-रूप करुणा आपकी सब पर रहे॥

॥ आर्य समाज के नियम ॥

पहला नियमः- सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

दूसरा नियमः- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

तीसरा नियमः- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

चौथा नियमः- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

पाँचवां नियमः- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

छठा नियमः- संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

सातवां नियमः- सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

आठवां नियमः- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

नौवां नियमः- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

दसवां नियमः- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ 1 ॥
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ 2 ॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ 3 ॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा नः सुसहासति ॥ 4 ॥

ओम्। शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली, हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन-वृष्टि को ॥ 1 ॥
प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो ॥ 2 ॥
हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों ॥ 3 ॥
हों सभी के मन तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख-सम्पदा ॥ 4 ॥

॥ जयघोष ॥

१.	वैदिक धर्म की	- जय हो (3)
२.	ऋषि ब्रह्मा से ऋषि दयानन्द पर्यन्त सभी ऋषियों-मुनियों की	- जय हो
३.	मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र की	- जय हो
४.	धर्मसंस्थापक श्री कृष्णचन्द्र की	- जय हो
५.	आर्यसमाज	- अमर रहे
६.	ओ३म् ध्वज	- ऊँचा रहे
७.	आर्य उद्घोष	- कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (3)
८.	आर्य अभिवादन	- नमस्ते जी